



झारखण्ड सरकार

गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग जल प्रबंधन के उपाय

झारखण्ड राज्य के गठन पश्चात् विगत पंद्रह वर्षों में दस वर्ष राज्य में पूर्ण/आंशिक सुखाड़ के कारण अल्पवृष्टि से सतही जल एवं भुगर्भीय जलस्तर में भारी गिरावट आई है। शहरीकरण के कारण व्यापक स्तर पर जल दोहन किया गया है। ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु एवं मिट्टी के आर्द्रता की भारी कमी, जंगलों की कटाई तथा वृहत पैमाने पर कंक्रीट के निर्माण के कारण जल विशेषकर पेयजल संकट की स्थिति कतिपय जिलों में उत्पन्न हो गयी है। उपर्युक्त के आलोक में आम जनमानस से अनुरोध है कि जल प्रबंधन के निम्नलिखित उपायों को अमल में लाएँ।

जल प्रबंधन - क्या करें/क्या न करें



- जल अनमोल है। इसका इस्तेमाल आवश्यकतानुसार ही करें।
- जल की बर्बादी तुरंत रोकें। यदि नल से पानी टपक रहा हो तो उसे शीघ्र ठीक करायें। पाईप लाइन लिकेज की जाँच एवं शीघ्र मरम्मत करायें।
- अपने घर, कार्यालय इत्यादि में जल के पुनःभरण के लिए सोखता अवश्य बनायें।
- जल संरक्षण, संग्रहण एवं वर्षा के जल के छाजन को अपनायें।
- एक परिवार में औसतन 240 लीटर पानी की खपत प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन होती है। इस्तेमाल किए गये पानी को नाली में न बहायें उसे घर के बगीचे या पौधों की सिंचाई में इस्तेमाल करें।
- ऐसे उपकरणों का इस्तेमाल करें जिसमें पानी की खपत अधिक न हों। दातों को ब्रश करते समय हाथ धोते समय, दाढ़ी बनाते समय, बर्तन धोते समय, वॉशिंग मशीन में कपड़े धोते समय पानी अपव्यय न करें।
- स्नान करते समय फव्वारा की जगह बाल्टी का इस्तेमाल करें।
- वर्षा के जल का छाजन (Rain water Harvesting) सभी मकानों में अनिवार्य है। इसे सुनिश्चित करें।
- अपने आस-पास जल की समुचित एवं उपयोगिता संबंधित शिक्षा तथा जागरूकता फैलाएं।
- यदि आपका चापाकल खराब है, तो इसकी मरम्मत हेतु पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के टॉल फ्री नं० 1800-3456-502/516 पर संपर्क कर अपनी शिकायत दर्ज करायें।

“जल है तो जीवन है आइए इसे मिलकर बचाएँ”

